ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-2* Issue-9* December- 2017
Anthology : The Research

नागार्जुन के उपन्यासों में नारी विमर्श

चंदा कुमारी
शोध छात्रा,
हिन्दी विभाग,
जीवाजी विश्वविद्यालय,
ग्वालियर, म.प्र.

सारांश

नारी का जीवन भी समाज में कम संघर्षशील नहीं रहा। उत्थान – पतन के कितने दौरों से गुजरती हुई नारी आज वर्तमान में अपनी स्थिति तक पहुँच सकी है। साहित्यकार की भावना में प्रारम्भ से ही नारी के दो परस्पर विरोधी रूपों में विधमान रही है। एक चिंतन धारा के अनुसार नारी के गरिमामय उदात्त रूप का प्रस्तुतीकरण हुआ और दूसरी के अनुसार नारी के अवगुणों का पूरा लेखा – जोखा प्रस्तुत करके उसे निन्दित किया गया ।

मुख्य शब्द : नारी विमर्श, हिन्दी साहित्य, उपन्यास।

प्रस्तावना

हिन्दी में उपन्यासों में नारी का स्वरूप निधरित करने के पहले नारी के व्यक्तित्व का मूल्यांकन करना यहाँ नितान्त अपेक्षित है। ''नारी भगवान की ही अदुभुत कृति नहीं है, वरन मानवों की भी अदुभुत सृष्टि है। मनुष्य निरन्तर अपने अन्तरत्तम से नारी को सौन्दर्य की विभूति से विभूषित करता है। कविगण स्वर्णिम कल्पना के धागों से उसके लिए एक जाल सा बुनते रहते है। चित्रकार उसके स्वरूप को उसके बाह्य सौन्दर्य को अमरत्व प्रदान करते रहते है। मानव हृद्रय की वासना ने सदैव नारी के यौवन को ऐश्वर्य प्रदान किया है नारी अर्द्ध नारी है और अर्द्ध स्वप्न है।''[1]

स्मृति ग्रंथों में नारी के व्यक्तित्व एवं समाज में उसकी स्थिति का विशद् विवेचन हुआ है हिन्दू – धर्म ग्रंथों में एक ओर नारी की प्रशंसा का प्राचुर्य है, दूसरी ओर नारी निन्दा भी कम नहीं की गई है। नारी निन्दा की यह भावना केवल भारत तक ही सीमित नहीं रही, संसार के अन्य धर्म ग्रंथों में भी नारी – निन्दा का प्राबल्य रहा है।

"उसने (पुरूष ने) कहीं इस स्त्री को देवता की दासी बनाकर पवित्रता का स्वांग भरा, कही मन्दिर में नृत्य कराकर कला की दुहाई दी और कहीं केवल अपने मनोविनोद के लिए वस्तु–मात्र बनाकर अपने विचार में गुण ग्राहकता ही दिखाई"।

आधुनिक युग मे नव चेतना का प्रसार हुआ। कुछ धर्म – सुधारकों ने स्त्री के जीवन को दुर्दशाग्रस्त बनाने वाली कुप्रथाओं का उग्ररूप में विरोध किया। अनेक धर्म सुधार आन्दोलनों का जन्म हुआ। आर्य समाज ने स्त्रियों की पुरानी रूढ़ियों को मिटाने का सदा प्रयत्न किया।

ब्रह्म समाज ने स्त्रियों की शिक्षा और स्वाधीनता के प्रश्न को उठाया। थियोसोफिकल सोसायटी, प्रर्थना समाज, वेदान्त समाज आदि सभी आन्दोलनों का एक उद्धेश्य यह भी रहा कि देश की नारी जाति का उद्धार किया जाए। स्वामी दयानंद सरस्वती, राजाराम मोहनराय, केशव चन्द सेन आदि का नाम इन प्रारम्भिक धर्म सुधारको में विशेष उल्लेखनीय है।

समाज की परिस्थितियाँ देश के साहित्य को सदैव ही प्रभावित रहती है। नारी की निन्दात्मक और प्रशंसात्मक दोनो दशाओं का ही साहित्य में चित्रण हुआ। मध्य कालीन साहित्य में नारी को लेकर कवियों ने अपनी वैराग्यजन्य कुण्ठाओं को ही अधिक प्रकट किया है। रीतिकाल में नारी को विलसिता का केन्द्र–बिन्दु बनाकर काव्य रचना की गई। डॉ. नगेन्द्र ने लिखा है–''रीतिकाल में पुरूष को नारी विशेष की वैयक्तिक सत्ता (इनडिविजुय –लिटी) से प्रेम नही था, उसके नारीत्व से ही प्रेम था''[3]।

आज साहित्य और समाज में स्त्री – विमर्श का सिक्का बहुत जारों से उछल रहा है। स्त्री की सार्थकता उसके देवी होने में या उसके खूबसूरत होने में नहीं है बल्कि उसके मानव होने में हैं। पुरूष के समान ही उसके अन्दर भी क्षमताएं एवं और दुर्बलताएं हैं। स्त्री के इस नैसर्गिक अधिकार को सभ्यता ने अपने विकास के साथ हाशिए तक पहुँचाया तब से स्त्री केन्द्र से सरकते – सरकते परिधि तक पहुँच गई।

कितनी सार्थक है घूमिल की यह पंक्तियां –''प्राचीन काल से ही स्त्री भोग की वस्तु थी आज की इक्कीसवीं सदी में स्त्री उपभोग की वस्तु है।''

नागार्जुन मार्क्सवादी लेखकों में ऐसे लेखक है जिन्होंने अपनी रचनाओं में भूमिका से सीधे लोक – जीवन से ग्रहण करके उन्हें रसमय – संवेदन पूर्ण बनाया है।

नागार्जुन के दो उपन्यास 'रतिनाथ की चाची' और 'उग्रतारा' स्त्री जीवन के क्रूरतम हादसों पर केन्द्रित है दोनों उपन्यासों में स्त्री की त्रासद जिन्दगी को विस्तार से औपन्यासिक रूप दिया गया है। रतिनाथ की चाची एक अभिशप्त स्त्री की अभिशप्त जिन्दगी को बयान करता है तो उग्रतारा एक अस्तित्व सम्पन्न स्त्री के आत्मधैर्य और आत्म विश्वास को उभारता है दोनों उपन्यासों में अनुभव और विचार के नए संदर्भ है दोनों औरतों का मोध पुरूषों की कामविकृतियों का शिकार होती है। अब सवाल यह उठता है कि समस्त यातनाओं को एक आदर्श नारी के रूप में सहकर मृत्यु को वरण करने वाली गौरी का जीवन श्रेष्ठ है या अन्याय के प्रति प्रतिरोध प्रकट कर अपने पति को छोड़कर प्रेमी के साथ भागने वाली उगिनी का जीवन सार्थक है। वैचारिकता की दृष्टि से उग्रधारा अधिक प्रखर स्त्री अस्तित्व को जाग्रत करने वाला जनधर्मी उपन्यास है। रतिनाथ की चाची की गौरी एक भारतीय विधवा का सशक्त चित्र हमारे सामने प्रस्तुत है। वैधत्य भारतीय स्त्री के लिए अभिशाप है। ''हमारे सभ्य समाज में सारे नियम कानून सिर्फ स्त्रियों के लिए हैं क्योंकि स्त्री समाज की एक कमजोर इकाई है''।

नागार्जुन का दूसरा उपन्यास है उग्रतारा, में दिखाया गया है कि स्त्री चाहे पिछड़े वर्ग की हो या समृद्ध सम्पन उच्च वर्ग की, हो उसकी नियति हर कहीं एक सी है। वह हर कहीं शोषित – अपमानित होने के लिए विवश है।

उग्रतारा उपन्यास की विशेषता यह है कि इसमें नागार्जुन ने एक स्त्री के प्रतिरोध को केन्द्र में रखकर उसके अन्दर के आत्मविश्वास और आत्मबोध को उजागर किया है।

नागार्जुन के उपन्यास नई पौध में नये बनते हुए समाज का पुराने दकियानूसी, रूढ़िग्रस्त समाज से जो विरोध है उसका बड़ा अच्छा चित्रण हुआ है। नई पीढ़ी समाज की विषमता और रूढ़ियों को मानकर आगे नही बढ़ सकती । मिथिला में सौराष्ट्र – सभा लगता है और वहाँ विवाहेच्छु बहुत वर एकत्र होते है। वहीं कन्याओं के अभिभावक भी अपनी कन्याओं के लिए वर चुनते है। खोखाइ झा ने अपनी कन्या के विवाह में इसी सभा द्वारा एक बड़ी अच्छी रकम जमा कर ली थी। अपनी कन्या का विवाह वे एक 60 साल के बूढ़े कई बच्चो के पिता के साथ तय कर देते है। परन्तु कन्या गाँव के नौजवानों की सहायता से इस अनमेल विवाह को रोक देती है। इस प्रकार गाँव की उभरती हुई यह 'नई पौध' गाँव की रूढ़ियों के प्रति विद्रोह करने में सफल होती है।

''उपन्यास आधुनिक युग का एक विशिष्ट साहित्यांग है। जीवन की नाना समस्याओं का उद्घाटन तथा उसका हल, यद्यपि सदैव अपेक्षित नही होता आज के उपन्यास का प्रधान काम''

उपन्यासकार एक समाजिक प्राणी होता है, वह जीवन की विविध समस्याओं और परिस्थितियों से प्रभावित होता रहता है। और तभी अपनी रचनाओं में वह उस प्रभाव को प्रदर्शित करता है।

आज का युग विषम समस्यों का युग है जैसे–जैसे परिस्थितियां बदल रही है वैसे–वैसे ही अनेक नई–नई समस्याये मनुष्य के समाने आ रही है मनुष्य का मन अभिव्यक्ति के साधन ढूंढ़ता रहता है और उन साधनों के मिल जाने पर अनुभूतियां प्रकाश में आती है।

निष्कर्ष

महिला सशक्तिकरण का अर्थ है, महिलाओं में आत्म सम्मान, आत्म–निर्भरता व आत्मविश्वास जाग्रत करना है। महिला सशक्तिकरण के लिए वर्तमान में सबसे बड़ी आवश्यकता उनको अपने अधिकारों एवं कर्त्तव्यों के प्रति सजग होने की है। यदि कोई महिला अपने अधिकारों एवं कर्त्तव्यों के प्रति सजग और आत्मनिर्भर है, तो उसका आत्मसम्मान अवश्य ऊंचा होगा और वे देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूंची

1. *डॉ. शैल रस्तोगी–हिन्दी उपन्यासों में नारी प्रकाशन 1977,साहिबाबाद पृष्ठ–1*
2. *शरत् साहित्य–नारी का मूल्य 13वॉ भाग पृष्ठ – 16*
3. *रवीन्द्रनाथ ठाकुर–विचित्र प्रबंध पृष्ठ –253*
4. *रीति काल की भूमिका पृष्ठ –162*
5. *साहित्य –संदेश , उपन्यास अंक पृष्ठ–87*
6. *धूमिल –सुदामा पांडे का प्रजातंत्र पृष्ठ 91*
7. *नागार्जुन रतिनाथ की चाची पृष्ठ 36,42,नई दिल्ली प्रकाशन 1995*
8. *नागार्जुन – उग्रतारा – पृष्ठ – 6,7,8, प्रकाशन नई दिल्ली 1987*
9. *नागार्जुन – नई पौध – प्रकाशन नई दिल्ली 1998*